Volume I, Issue XVI
October to December 2016

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Impact Factor - 1.9411 (2015)

2016-17

Naveen Shodh Sansar

(An International Multidisciplinary Refereed Journal)

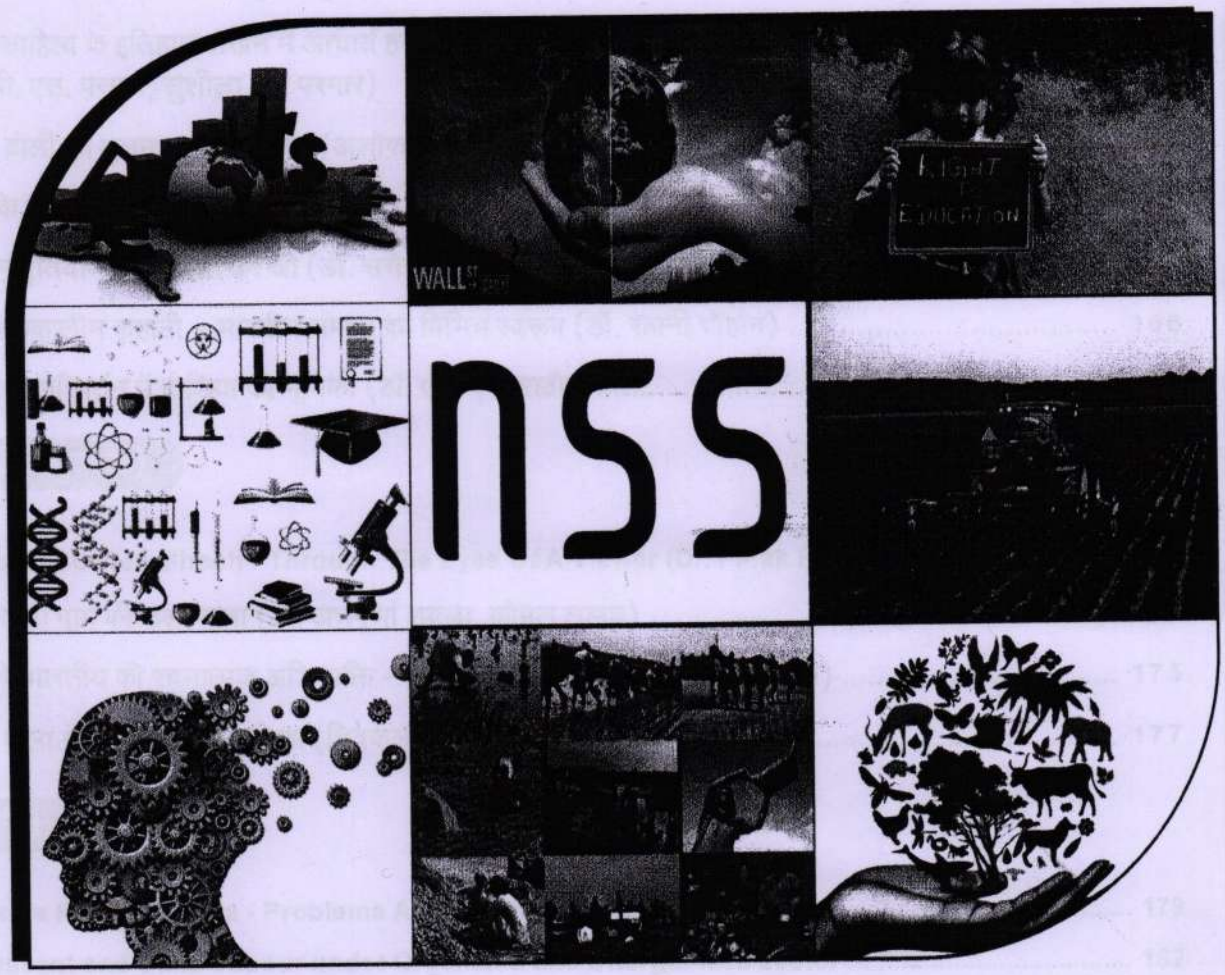

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

56. मालवी लोक साहित्य की प्रमुख कवयित्री – रानी रूपमती (डॉ. वन्दना जैन, कादम्बिनी जोशी) 151
57. रामेश्वर शुक्ल अंचल के काव्य में मानवतावादी एवं जीवनमूल्य का दृष्टिकोण 154
(डॉ. संगीता मरावी, डॉ. दीपक कुमार गुप्ता)
58. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान 157
(डॉ. पी. एस. परमार, सुशीला देवी परमार)
59. मालवी बोली का तुलनात्मक व्याकरण (अशोक बैरागी) 160
60. नक्षत्रों के साथ खेती (डॉ. अनुसुईया अग्रवाल) 162
61. जीवनानुभूतियों से जुड़े त्रिलोचन जी (डॉ. सरोज जैन) 164
62. हिन्दी समकालीन कहानी – भारतीय समाज का विभिन्न स्वरूप (डॉ. रागनी चौहान) 166
63. सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका (डॉ. एस. एस. राठौर) 168

(Drawing / चित्रकला)

64. Works Of Sushen Ghosh - Through The Eyes Of A Viewer (Dr. Pinak Pani Nath) 170
65. किरन सोनी गुप्ता की कला यात्रा (डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला, कोमल लुहाच) 173
66. डॉ. मणि भारतीय की रचनात्मक अभिव्यक्ति – एक दृष्टि (प्रो. पुष्पा दुल्लर, अमिता देवी) 175
67. ललित कला में लोककला की भूमिका (चित्रकला के संबंध में) (डॉ. यतीन्द्र महोबे) 177

(Law/ विधि)

68. Women's Rights In India - Problems And Prospects (Chirag Banthiya) 179
69. Adolescent and Child Labour under Organised and Unorganised sector 182
(Dr. Deepika Bhatnagar)
70. Judicial Review - Tool To Balance The Suoremacy Of The Constitution (Aprajita Bhargava) ... 185
71. सुलह सम्बन्धी विधियाँ और उनका मूल्यांकन (डॉ. सीमा राजपूत)

(Education / शिक्षा)

72. बिलासपुर जिले के एम. एड. के प्रशिक्षणार्थियों के शोध अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन 191
(डॉ. प्रज्ञा यादव, अजय सिंह ठाकुर)
73. जीवन कौशल शिक्षा – उद्देश्य एवं आवश्यकता (पूजा राघव) 194

ललित कला में लोककला की भूमिका (चित्रकला के संबंध में)

डॉ. यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना – लोककला की समयावधि का अंकन स्पष्ट नहीं हो सका है लेकिन इस कला की परंपरा का रहस्योद्घाटन मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा की परंपरा से प्राप्त होता है। लोक कला पर चर्चा करने से पहले हमें 'लोक' शब्द के अर्थ को समझना अति आवश्यक है।' लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है, बल्कि नगरों और गांवो में फैली हुई वह समूची जनता है, जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं है।

इस तरह मनुष्य जो भी अपने आसपास देखता है, महसूस करता वह उसे अपने में पूरी तरह समाहित कर लेता है और इसी 'लोक में पारंपरिक रूप से बनाए जाने वाले चित्रों को लोकचित्र की संज्ञा दी जाती हैं, लोक चित्रों में वे सभी रेखांकन और अलंकरण समाहित है जो पर्व-त्यौहार, अनुष्ठान और संस्कार से जुड़े होते है।'

ये लोक चित्र लोक लोककारों द्धारा आंगन (गोबर) दीवार, कागज तथा अन्य माध्यमों में बनाए जाते है। लोक-चित्रों में जो रंगो का प्रयोग किया जाता है वह प्राय: पारंपरिक विधियों द्धारा तैयार किए जाते है। इन लोक-चित्रों में मानव आकृति के शारीरिक अनुपात तथा अन्य आकृतियों के अनुपात को ध्यान में नहीं रखा जाता, साथ ही इनमें प्राथमिक रंग लाल,पीला, नीला, हरा, काला और सफेद जो प्राचीन समय से प्रचलित है, प्रयोग होता है। पतली लकड़ी में बाल या रूई लपेटकर तूलिका के रूप में प्रयोग होता रहा है। आजकल तैयार ब्रुशों का चलन होने से सभी लोक चित्रकार आधुनिक ब्रुशों का इस्तेमाल करने लगे है। लेकिन अभी भी ग्रामीण महिलाएं या पुरूष चित्रकार स्व निर्मित तूलिका का प्रयोग अपनी चित्रकारी में करते है। ये लोक कलाकार मानव आकृति तथा अन्य आकृतियों के तकनीकी ज्ञान से अनभिज्ञ होते है, क्योंकि ये कला किसी शिक्षा पद्धति में शामिल नहीं है, बल्कि ये क्षेत्र विशेष के मांगलिक कार्यक्रम, विवाह, तीज – त्यौहार, जादू-टोना आदि में जन सामान्य के बीच अभिव्यक्ति का एक सरल व सहज माध्यम है। विशेष रूप से स्त्रियां लोक कला के अंतर्गत चित्रांकन कार्य विशेष प्रयोजन से करती है।

'लोक चित्रों के विषय धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक होते है। चाहे वह किसी भी क्षेत्र के लोक चित्र हों, इनके अंतर्गत लोक चित्रों में जो आकृतियां प्रयोग में लाई जाती है, वह प्राय: फूल – पत्ते, बेल, तुलसी, चक्र, शंख, स्वास्तिक, बिन्दु, रेखा, त्रिभुज, चतुर्भज, वृत्त, आड़ी-तेड़ी रेखाएं , हाथी, घोड़े, मयूर, तोता, नाग, बिच्छू, चिड़िया, पशु-पक्षी , वृक्ष आदि होते है। जो बड़ी सहजता पूर्वक लोक कलाकारों द्धारा बनाए जाते है। इनमें जो रंगो का प्रयोग होता है वह सपाट पद्धति में होता है।

'लोक चित्रों के पीछे कोई न कोई मिथक, मिथकथा या अनुष्ठान निहित होता है। यहां तक कि लोक चित्रों की आकृति रंग और रेखाओं तक के लिए कोई न कोई मिथ जुड़ा होता है। लोक चित्रों में बनाए जाने वाली आकृतियां यार्थत परख नहीं होती, वे प्रतीकात्मक होती है। इन लोक कलाकारों की पूरी जाति की जाति ही विकसित हो जाती है। ऐसे कलाकार पेशेवर होते है। वे चित्र बनाने के पैसे लेते है और पारंपरिक रूप से मिलने वाला नेग भी प्राप्त करते है। ऐसे जाति कलाकारों का समाज में भी बड़ा मान-सम्मान , प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। धीरे-धीरे ये लोक चित्र शैलियां इतनी शीर्ष पर पहुंचती जा रही है, कि वे आधुनिक चित्रकला के महर्षियों तक को प्रभावित करने में सक्षम होती है।'

भारतीय कला की उन्नति में लोक कला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, चूंकि इसका विकास किसी राजाश्रयों के पेशेवर कलाकारों द्धारा नहीं हुआ बल्कि यह घरों के आंगनों में, ग्रामों में, अशिक्षित जातियों में, बिना कोई प्रसिद्धि के धार्मिक, सांस्कृतिक व पारंपरिक परंपराओं के साथ बिना बौद्धिक ज्ञान के आगे बढ़ती रही है।' कला का सबसे प्रमुख कार्य है, मानव को आत्मिक शांति प्रदान करना, इस कार्य में कला तभी सफल हो सकती है, जब उसके साथ दर्शक का सहयोग व भावनिक तादात्म्य हो सके। लोक कला का सबसे महान गुण यह है कि वह न केवल लोगों के धार्मिक कार्यो व उत्सवों में बल्कि दैनिक जीवन में भी घुल-मिलकर उनकी धार्मिक एवं मांगलिक भावनाओं व सौन्दर्य प्रियता की पूर्ति करती है। लोक कथाएं, पौराणिक कथाएं व वीर गाथाएं उनके सामने जीवन उपयोगी ज्ञान का भंडार खोलती है, वह प्रेरणा स्रोत होती है।'

आज इस लोक कला से शिक्षित कलाकारों, विद्धानों एवं कलामर्मज्ञों का साक्षात्कार होते ही कला क्षेत्र में एक नया पन्ना जुड़ गया। लोक चित्रकारी से चित्रकारों को बड़ी प्रेरणा मिली है। लोक कला पर आधारित नये प्रयोग आज के कलाकारों को अपूर्व सफलता की ओर ले जा रहे है। लोक कला स्वत: ही अपने सहज और निर्मल रूप में हमारे जीवन का एक अंग बन गई है। लोक कला के प्रकाश में आते ही इसकी विशेषता को कलाकार ने केनवास, कागज तथा कपडे पर अंकित करना प्रारम्भ कर दिया फलस्वरुप यह दर्शकों तथा कला मर्मज्ञों के बीज आकर्षण का केन्द्र बन चुकी है। यह भारतीय संस्कृति की आत्मा व भावात्मक एकता को सजाए हुए है। जिसका आधार सार्वभौमिक सुख समृद्धि तथा दीवारों तथा आगन पर बनाई गई आकृतियां ही नहीं वल्कि पुरुष कलाकारो के लिए भी अपनी कलाशैली मे परिवर्तन का माध्यम बनी है। भारत में मधुवनी, बंगाल उडीसा छत्तीसगढ मालवा ,बुन्देली असम आदि अंचलो मे बड़ी सुन्दता एवं आकर्षक रुप से अपना स्थान बनाये हुए है। लोक कला की ये भावमयी ये आकृतियां आज उपयोगी कला के रूप में भी दिनों-दिन अधिक लोकप्रिय होती जा रही है। वे साड़ी, लंहगा, चादर यहां तक की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठों पर अंकित होकर अधिक-अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

आज ये लोक आकृतियां आधुनिक कलाकारों की प्रेरणा बनी हुई है।इन

* सहायक प्राध्यापक (चित्रकला) शासकीय महिला महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत